

राजारा ज्योत्ना प्रोतिनिश्चितं । अथ भार्यो लभते भार्यो सुखार्थी सुखमाप्नुयात् ॥ हूं रसौ
इत्युक्तं फलस्वाहा ॥ अनेन नखदिरसमिधं विषरक्ताक्तां जुहुयात् सहस्रेणाम
हा ज्वरेण ह्यनेः ॥ ॐ रां रौ र स्वाहा ॥ अथ पञ्चरहस्यमंत्रः ॥ ॐ ऐं कालिका कालिका स्वा
हा ॥ अनेन मंत्रेणाश्वत्थसमिधं घृताक्तां सहस्रे होमेनावृष्टिं काले महारुष्टि
भवति ॥ ॐ मानसे स्वप्नसुविचार्य विद्ये वद वद स्वाहा ॥ शुविर्हृत्वा हविष्यान्नं न
क्तायुतं जपेत् । दिने संध्यायां पूजा कार्या स्वप्ने शुभाशुभं कथयति । नूनं न विष्या
द्वान्ना कथयति ॥ ॐ कौ कुरु कुन्ने स्वाहा ॥ नागदमनी वीद्यामहनी बुद्धरा

क्षकादिनीशाकिनी स्मृतेन शयति । सर्वसिद्धि कविद्या ॥ ॥ इति श्रीवीरभट्ट
तंत्रे महाकोषे द्वितीयः पत्रसः ॥ ॥ ॐ कामातुरा काममेष लावि द्योषिणी सवनिश्च
सुकवसं कुरु कौ नमः ॥ अनेन मंत्रेणाश्वत्थं सप्ताभिर्मंत्राशुक्तामप्रमेदिवस्यस्त्रि
यं वापुरुषं वावशमानयति ॥ ॐ जुं सः ॥ त्रिसंधां जपेन्नशत्रुं नाशयति ॥ ॐ ज्वं सः ॥
नित्यं जप्त्वा मृत्युनाशं भवति ॥ ॐ कं काली महाकाली केलिकला न्यां स्वाहा ॥
अनेन मंत्रेणामस्तां जुहुयात् सहस्रं कालीवरदा भवति स्वर्गोपलब्धं सुखं ददा
ति ॥ ॐ कौ हौ हौ ॐ नमः ॥ पूर्वविधिना मंत्रं जाप्येनाह मासेनाकर्षतामुः ॥ ॥

ॐ हं नमः॥ सर्वविधिना जाये नपादु का सिद्धिः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ३ फटः॥ अनेन
 मंत्रेण शिवस्य स्थितो जघाते नालसिद्धिः यावन्ने वा शेषं यातिः॥ ॐ ह्रीं स्वाहाः॥
 अनेन मंत्रेण नरनैलेन करकपालेन वन्निकामादाय दिष्णं प्रज्वालया धूपैश्च
 सानेशरन्यालये वातावर्जये यावन्ने वा शेषं यातिः॥ अथ शान्ते भूतवलिः न
 ववलिस्थानमायते नाञ्जीत नयनं सिद्धां जनमवति सुरासुरादृश्यते ॥ ॥
 ॐ ह्रीं ह्रीं ३ ॐ हूं २ अमुकं हन हन खड्गेण स्वाहाः॥ अनेन पाति न गोमयेन सा
 ध्यापुति कृतिं कृत्वा साध्या तनुं शमसाने नीत्याया म्यानि मुखे नूत्या शाक्ता वि

धिना जपेत् ॥ तनुं जंघे दं शिरश्छेदकृत्वा जुहुयात् ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ३ फटः॥ त्रैलो
 क्यविराजमानां विद्यां मनसा स्मरेत् ॥ सर्वकामप्रदो मंत्रः॥ सँसः नँनः हँहः सँसः
 टँटँः खँखँ तँतँः वँवँः वँसँः स्फूँस्फूँः क्रीँ हूँ हूँ हूँः क्षीँ क्षीँ ४ जाँसँः क्रीँ फफलफटस्वा
 हाः॥ इति मंत्रेण चराचरस्य समस्तविषनाशनम् ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ३ फटः ॥
 सर्वविषसर्वभूतग्रहनाशनं मंत्रः॥ ॐ हँ हँ सँः शान्तिदायक मंत्रः स्मरन्मात्रे
 णः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं अमुकं टँटँः॥ अनेन मंत्रेण विवाकाश्च मयं कीलकं मया दशांगुलं
 सहस्रेणाभिमात्रेयस्य नाम्ना नृमौ निरतनेन स्वरेण सपरिवारो गृह्यते डडुते

शान्तिः॥ ॐ कौं कौं वौं अमु कं टं टं ॥ अनेनमंत्रेणासे कुडका ए कीलकं न
वा कुलसहस्रेणानिमंत्रितं यस्य नाम्ना यस्य गृहे निखने तस्य वशो भवतिः॥
ॐ मातंगिनी की की स्वाहाः॥ अनेनमंत्रेण राजिकालवशमिश्रितं द्युतं होत
वं स्त्री वा पुरुषं वा कषयति वशो भवतिः॥ ॐ कौं कौं टं ॥ कै आका ए कीलकं
द्वादशांगुलं सहस्रेणानिमंत्रितं यस्य गृहे स्थाना निखने तस्य पुत्रो भवतिः॥
ॐ महोरानमः॥ अनेनमंत्रेणावदरका ए कीलकं चतुरंगुलं सहस्रेणानिमंत्रितं
यस्य गृहे निखने तस्य परिवारो वशो वै भवतिः॥ ॐ अमु कौं मे प्रपद्यु टं टं ॥

अनेनमंत्रे पाठलि का ए कीलकं पंचांगुलं सहस्रेणानिमंत्रितं यस्य देवाय
ने निखने तस्य कन्यां लभते विरेसाः॥ ॥ इति श्री वीरभद्रमहातत्रे मंत्रकोषे न
नियः पठलः॥ नमस्ते अयुतसर्वतिलव लव लवीर्यवर्द्धनि वलं वदेहि अजस्रि
सृ कल्याणं मम कार्य करीम व मम काय दूते स्वर्गलो कं यास्यते॥ यन त्वां रव
न्मि व ह्मा दे मेन्द्रे ये नृ के शवः ते न त्वा म हं रव निष्ठा मि पंचशा रे न पाणिनाः
इत्यौ धौ क्षार मंत्रः॥ ॐ हुं हुं दे दे सः सः॥ अनेनमंत्रेणासनमनिमं ज्यो ज्यो क्तव
प्रविषमसि कादिकं वा निवारिकं वा धूलो मादिकं सर्वं भस्मी भवतिः॥ ॐ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ एतन्मन्त्रं जप कार्यः ॥ अथुतेनाग्निं प्रविशन्मन्त्रं
क्वाजवति सहस्रेणासर्वं वशमानयति ॥ स तेन देशेनास्थति ॥ तथा सः
वस्यं नाशयति ॥ अथ मन्त्रं पुनः शयति ॥ ॐ विश्वाय विश्वेश्वराय विश्वप
तये नमः ॥ शतजपेन सर्वं कामदो मन्त्रः ॥ विंविं लिं लिं ठं ठं ॥ अनेन मन्त्रेणाद्युतं
प्रधुयुक्तं जुजपात सहस्रेणाग्निं सौ जाग्यं लज्जे ॥ ॐ कं कं किं कीं अमुकं कं कं
कं कं कं कं ॥ अनेन मन्त्रं खदिरसमिधं सद्युतं सहस्रं कं जुहुयात् करसां ॥ ॥
ॐ सोमाः ॥ पानिना जपेत्सुस्थो जवति ॥ ॐ हूं रवं रवं रिवं रवं रुरवं र्वे र्वे र्वो

रवं र्वं र्वं ठं ॥ अनेन मन्त्रं ज्ञातक काष्ठ कीलकं षडंगुलं सहस्रेणाग्निं मन्त्रितं य
स्य पादतलस्थाने निरवने तस्य कुष्ठं जवति ॥ उधते मोक्षः ॥ ॐ ऊं गं गां गिं गां गुं गं
गं गं गं गं गं ॥ अमुकं ठं ठं ॥ अनेन मन्त्रेणागर्दनास्थि कीलकं नवांगुलं सह
स्रेन प्रमन्त्रितं चतुष्ये निरवने तस्य गर्दभो वति ॥ उधते मोक्षः ॥ ॐ ओं वं वां विं
वीं वूं वूं वूं वूं वूं वूं ॥ अमुकं ठं ठं ॥ अनेन मन्त्रेणागर्ध्वास्थि कीलकं चतु
र्दशांगुलं सहस्रेणाग्निं मन्त्रितं यस्य नाम्ना चतुःष्ये निरवने तस्य शसनेन गृह्य
ते ॥ उधते मोक्षः ॥ ॐ ऊं ऊं जं भां जिं जीं जुं जूं जे जै जौ जौ जं भः ॥ अमुकं ठं

गोमि मन्त्रिनौ तं गजशाखायां निखने खने गजनिपातविडम्बु नेशान्तिः॥ ॐ शंशां
शिंशौ शुंशूँ शौँ शौँ शौँ शौँ सः वसः॥ अनेन मन्त्रेण पालाशकायुकीलंक द्वादशां
गुलंसहस्रेणां निमंत्रितं यस्य गृहे निखने न्नस्य शान्तिर्भवतिः॥ ॐ ह्रूं सः शुभुक
क्षौक्षौ हुं ठठ॥ अनेन मन्त्रेण ताप्रका लंकपलमात्रं पंचांगुलं सहस्रेणां निमन्त्रि
तं यस्य नाम्ना कलतले निषने न्नस्य गोच भंगो भवतिः अती च वेदना जायते उ
द्ग नेशान्तिः॥ ॐ है हाँ हिं हाँ हुँ हूँ हैं हे हो हौं हंहः क्षौ क्षौ क्षौ क्षौ क्षुं क्षुं क्षौ क्षौ क्षौ क्षौ क्षौ
क्षः हँ स हँ॥ अनेन मन्त्रेण सकृदुच्चारितेन नश्यति। स्थावरजंगमकृत्तिमन्नूपेत

केठठः॥ अनेनमंत्रेण गृध्रास्थि कीलकं शृंगुलं सहस्रेणां निमंत्रितं य
 स्य नाम्ना चतुषथे निखने तस्य त्रुचुमते नागेन तत्र गृह्यतेः॥ ॐ हूं फट् म
 यजं हठठः॥ अनेनमंत्रेण मेघास्थि कीलकं यंत्रांगुलं सहस्रेणां निमंत्रि
 तं यस्य नाम्ना स्वगृहे निखने तस्य सर्वाथ सिद्धि सिद्ध मसिद्ध स्वगृहा
 यांति॥ ॐ र्यं शं शं वलं हं वं दं दं स हं हं मसः॥ अनेनमंत्रेण सव्यं
 शिवं विषनाशनम्॥ विषमुदरगतं अतिमंत्रितं उदरे दातव्यं पुनस्ततः सुखा
 नवति॥ ॐ ॐ ॐ सै सै शै मर्वं ठं ॐ ॐ हूं ॐ जं रं कौं कौं फट् ठं ॥ अनेनमंत्रेण स

वविक्षपं जायते॥ हूं कुं इ स द संध्यातव्यं कुं भयोगेन मासमात्रेण संध्याकिद्धि
 : द्विमासेन कर्म सिद्धिः षणमासेन खेवरत्न लभते॥ कौं वधूं क स द शंध्यातव्यं
 त्रैलोक्यं वशं मानते॥ अनेनमंत्रेण विषं न देवित वसिद्धि न विषयति॥ तः
 स्माच्छाशंतु कर्तव्यं यदा शे भंत्रसाधने॥ ॐ कौं हृदयाय कौं सिरसे स्वाहाः हूं
 शिषायै वषट् ॐ कौं कवचाय हूं ॐ कौं नेत्रायै वषट् ॐ कौं स्वाय फट् ॥
 मंत्रेणा नेन सिद्धिः॥ इति श्री वीर न इमं त्रैमंत्रकोषे पंचमः पटलः॥ शुभः॥

आर्य समाज
ASIA ARCHIVE

3100

५० वीर अष्ट तन्त्र मन्त्र कोष

ॐ नमो ह हा न्ये नमो ॥ ॥ विष्णो क पूर्व पिथ सः वा हान हंस
 अ क्का स अ सा म्भ रु ल ज्ञाय मा ल विन्द पा ठ सा हने ॥ मिषा
 इ स व ल रु लं सुर्वे व न्नु सुद नि पुष्प म का ति क ति अ स पा
 नि प द्म सर्व दा ॥ १ ॥ ग सा थ सा रु ला अ सं ति सा ल मु कि न त्र नं
 पा सा न न कं जा ति ति सि धि सि धि स डी कं ॥ ति स ल र व र्ग ख
 प्य ल क्का वा क वा ढ मा ल नं प्र ना म क ति क ति अ स पा लि प द्म
 सर्व दा ॥ २ ॥ मा म्भ वि ध वा स अ स वा ल रु व ह न वि सर्व ग ॥

ना स मा क आ स नं म्भ र्ग ॥ पा न पा ७ ग कि अ ढ न ज स
 ऊ अ उ ति पु ना म का ति का ठि अ स पा लि प द्म सर्व दा ॥ ३ ॥
 ग सा म र्ध वं वि स प व क नं आ सा स्वं हा हा लं रु रु नि रु
 रु न स्या ता प्र ना म क ति क ति अ स पा नि प द्म सर्व दा ॥ ४ ॥
 वि ला स मा क ता ग वि ० ति म्भ व थ ग्रा क सं पा सा पि सा ब ह
 न ज थ सि ध का ति दा कि नि ॥ क्का वा क वा ढ मा ल मा ल न
 र्ध वं रु नं सा हा प्र ना म क ति क ति अ स पा लि प द्म सर्व दा ॥ ५ ॥

ग सा ग जिह्र आसपा वा पि पि ० था न मा **कृ** धं ० वृज पा उ आ
क वा क आसनं ॥ स दा क ल प सु ह लि द वि सि धि कि त्र लि पु ना
म कृ ति कृ टि आसपा लि प द्म स र्व दा ॥ ४ ॥ ध र्म ग र लि त न क
आ स था क द म्ब लू दि नि मा आ सा सहि क र व भ वा उ पु त न्ना
स न मा ता ॥ ति सा क पा ल मा त हि क क नु ल न स सा पु द्म
म कृ ति कृ ति आसपा लि प द्म स र्व दा ॥ ५ ॥ वि आ क सि ह
आ स न आ सा र व भ ह न क ति सा स व लू न त व सु या न

नं स्व हा उ लं ॥ अ ष्व स्त वृ थ वा स पा क पि ० गु नी मा न
सं पु ष्म म को टि कृ ति आसपा लि प द्म स र्व दा ॥ ६ ॥ द थ
स ह क प स नं वि आ क द स आ स न व ता ल आ स न
स दा ष म सा न स ल स आ पा ॥ पा सा न न क आ गा नि द
या ति व स व क आ पु ष्म म कृ टि कृ टि आसपा लि प द्म
स र्व दा ॥ ७ ॥ ग ज व क ग न्म स वि द्य ना सं क्रि था सं त
न म न कि क हा आ ठे ग वि मृ ति वि ह न ॥ स ग न स हि न

दुर्गा हे नवकांत पा लं थ ग वि पा ० या क का त मा धो ला त
॥१०॥ ॐ ति शा दे व रु मा ध व न विल बि त ॥ शा न व रु दु र्गा
स्का तुं समा फ ख तु २५ ६ वे धि सा ष वु दि जू रो ज १ सु ला
१ ॐ न म र र व न मा ॥ ॥ अ ज मा न ष ह स म्पु प मा मि न मा
शा ३ अ म क द व ता पि ति थ प रा पें वा त पु ज्ञा नि मि ल
पें प ष ह ज न स म्पु पि मा मि न मा ॥ श्री सं वे ला धा य र
ति धि त रु क्रि षा न रु वृ धि त रु ध ना ग म वृ धि त रु श

ति न ष अ नि त रु ग रु त व ॥ स र्व वि द्य पु ज म न स र्व अ
नि क न स रु ॥ अ म्पु स पु रु व का म व त रु सि सं ग ति व
ध न ॥ अ धा वा न प हा ना ना क व व रु व ति वा न तं न
रु द व वि द्या ना ना अ नि रु व रु वा न तं ॥ प ष ह ज न
स म्पु प मा मि न मा ॥ सु आ धे ॥ अ रु नि मि ल थ कं तु शा
प्री मं अ र्थ न मा ॥ सु ति ॥ व रु न वि रु म ध स न मा य
नि रु सं ति न ॥ आ दि म आ व सा न तु अ रु वे व रु सा श्व नं

म म नाहि स्वत वे व ग म ग्री व ग ह वि तं ॥ क त म क क्ति तं द
वं महा मा लु ३३ हे ल व ॥ ४ ॥ उ त म्ना त ॥ म द्या दि वा क ॥ ५ ॥
मा न स्य ३ म क दे व ता पि ति र्थ य वा य वा त य ज्ञा ति मि ति र्थ
म हि ष क स म हि न सु ॥ ६ ॥ का न वाम वि ज्ञ त द्य नि व न
न व र्ज या नि त द्य का न व लो न म क त न य न म व क्रि
वि ज्ञ स ह सः ३ र वि द्रु त या नं जित कम ल ष तं की न धा
ना म व नं द द्वा क रं ३ नि ह्यं द ह ति क त म तं म न रं

आ हि वा यं ॥ ६ ॥ का पा ॥ य प सा य प प ह्य न पृ थि आ प त
स व न ॥ का म ध्य न ३ व नि र्थ ॥ सा य पा मि जि वा लु मा ॥
ध नि क्का य ॥ ६ ॥ उ मा य नि द वं द वा नां पि य व न ह ॥ वा
का क ल्य त न ३ न म न सान न त ल्य त ॥ सा ष का य ॥ ६ ॥
म न म हा सा दः म न सा शा त त स द ॥ ६ ॥ न स्रा पि ता
द वि म र व लि त व न पृ थ ॥ क सि क्क म ॥ न मृ त स्रा य
पा म ह ॥ ॥ धृ त पृ त पि ना क न सि क्क पृ त पि ना कि ना ॥

नृत्तिस्वर्गस्वर्गधनता त्रिंशत्कुरुन सिद्धं ॥ यमस्त्रिंशत्किं
हन्तं दवा नाप्रिवत्तु हं ॥ तिष्ठं वा मृत्तान ॥ तं बधान ॥
सं बन्धस ॥ गता बन्धे मृत्तान् ॥ सानक ॥ सन्तो शक्तिमिवा
मातनत्समित्सुमृतमं ॥ निष्प्रसिद्धिप्रदं पद्ममरीत्तानं
ददा म्महं ॥ नृत्तिस्त्रान ॥ वंरुन ॥ ग्राख ॥ श्वेनं दिवांगध
धसमना हन्तं ॥ आह बिर्त्तुत्ताना कवन्तं पुतिगृह्णा

वन्तं लुपितं वन्तं पवित्रं पापनाशनं ॥ आपदाहन्तं
निलतच्छिन्नाश्रुसदानिव ॥ सिद्धनृत्तान ॥ विलुप्तता
महाविन्विन्विहस्मविहृषित्ति ॥ तौत्ता कर्कषनिद्विदि
दौहन्तमृत्तमं ॥ सिद्धनृत्तिनकं वन्तं हन्तं ज्ञापयषवि
त्तं ॥ सिन्निश्रुप्य विन्वन्ध निखन्तुत्तान् ॥ सान्निभित्तामृ
तं ॥ माहन्तं वन्तं सदा वन्तं कानि लक्षित्तानाप्रनः मृत्तं ह
न्तं न कानि विरूपन कामध्वनिपात्रव ॥ दृष्टि नितक ॥ लुन

बहु विस्तारान्ते न ज्ञाने विनिमित्तं ॥ दवताये प्रदातव्यं
दिव्यतज्जलसुप्रदं ॥ ॥ अक्षतकाम ॥ अक्षतं अक्षया कामं धु
मिका मायसिद्धिदं ॥ ॥ स्थितामवस्तुदहिपुनरुवपेनाग
ति ॥ पृष्ठाद्विनिमित्तं ॥ इक्षीकृतं समं पृष्ठाद्विनिमित्तं ॥ ह्यदवामह
शोभनात्ताम्यदं हं सुदं सद्यकामदं ॥ अक्षतकामकामके
प्रक्षीपवितं पनमपवितपुत्रायतजा सहसं पुनत्ताशो
पृष्ठासुगं पुनिसवस्तुतं प्रक्षीपवितं पनमस्तु न ज्ञ ॥ अ

इति ॥ तानावस्तु विनिमित्तं पृष्ठाकार्यसं संहवं ॥ दवता
ये प्रदातव्यमक्षतवासंस्तुसाहनं ॥ इक्षीपृष्ठासुगंधानिज
क्वितज्जलप्रदाः निधिस्थिप्रदानिलंगुहपनमश्चन
मानकाम ॥ तानापृष्ठासुगंधानिमाताद्याकसुमादयासो
हाग्यस्थिसंहं पृष्ठाशान्तमस्तुमं ॥ कर्तुं पनाकाशा
कल्लोपनिदमानवपुत्रकोकर्तुं अभितं दवताये

दा न व म हा सा हा ग्य म ह मं ॥ प व य ना का ॥ प ना का यं ॥ व ॥ न
न जि न स म ना ह नं ॥ द व्या ॥ शि ना प नि स दाः दा न व स म ना ह न
य न वा स था य ॥ पी न न न ज सा द व्याः न न ना ज व वि क य नः न प
थे कि हि दं ह डं स र्व वि धि वि ना स न ॥ व ह म थ क म म क ड
शु क ह व कृ तुं वि ना स नि स म ह मं ॥ म ना मा न्या दि दा वि
हि सं व तं तं पृ ग्ग श ना ॥ ज्ञा पृ ज्ञा ॥ न न म हा व स दि व न

सो ॥ ष स्ति स म म्बि नं म या नि वे दि न ह क्का ग्ग हा ह प न म स्य ति
ने वे द क्का य ॥ ने वे द्य ग्ग क्का ना द वि रु कि म हं व ना क र ॥ ज
प स म्ब ह नं द वी प न तु व य ना ग ति ॥ ह न ह न क्का य ॥ पृ ग्ग ज्ञा ति
रु ते ज्ञो आ मा दि वि ज्ञ पृ न कंः र व ह नं तु दि मं पृ कं ना म्बु स
प्र ति ग्ग क्का नां ॥ प व व न क्का य ॥ श क्का ना व हि का मि स सं स ह निं वा
ध व लु कः घृ त स कृ न श म्ब कं म नि वि नि व पृ नि तं ॥ ना म्बु स

सर्वं सो हा ग्य सर्व हि ना उ स्य द ति प्रा द द ॥ ना ग सा क वि नि
मृ कं ना म्बु स प्रति गृ ह्ण ता ॥ न र्घ ॥ ॐ न र्घा पि द व द वा सि
ॐ श्री का म व न पु द ॥ १ हा न व म मा द रु वि स्तु १२ कृ ने म
सु १ ॥ धृ प ॥ दि व्य ग द्य स मा य कं सर्व द वा णि प्रा रु हा ॥
श्रा द्धानं सर्व द वा नां धू पा यं प्रति गृ ह्ण ता ॥ धू पा हा न
षु ह ग वा न वि स्तु र पि म ह १२ नि ॥ धृ प ना व प द वा सि

सु प्रि तां पु न म १२ नि ॥ दि य ॥ स पु का सो म हा नं ॐ सर्व
नं सि मि ना य हं ॥ स वा श्रा त्यं ते नं प्रा ति दि या म पु ति
गृ ह्ण ता ॥ श्रो ति य श्रा मि ॥ न त्र म हा न सं दि व्य त्या दि ॥
न र्घे य गृ ह्ण ता दि वि ला दि ॥ ॥ रु स पु श्र ना म्बु स धृ प दि य
प क्कान ॐ द न र्घे य न म ॥ ज य सु सि ॥ गृ ह्ण ता ति श क
व्य कि त्वं ग हा ना न्म कृ तं ज यं ॥ सि धि रु व तु म नि त्यं त्व प्र
सा रा म ह १२ नि ॥ स ग्म न ॥ सि धि र्थ दि धि या व न व स ग्म न

सपुत्रं वृद्धं पमं वा यो यद्यनितो यत्ना संतकनि वा ॥ ५ ॥
 सिद्धिं कनिपस्या संहवसम्य दजय कनिता वृद्धं संम
 हा सिद्धिं दः दिद्यायुग्मि कान नृविजयतः समुत्तदा
 पातु व ॥ भाहनि ॥ १० ॥ कमाह निस्त्रां निष्कलदह
 निहं जनी सर्वविद्धिं हनप्रतविश्ववहयमृखहन
 निध्यं सिनिता किनिनां नकाहना ननां निवसकल

प्रता सर्व मर्त्य ल्यप्र का सा दे वि मा ह नि यं त्रि य द ग ति
 प्रता सर्व सयु ल्य रा रा प्र ॥११॥ ॐ ति मा ह नि यं ॥ ॐ न मा म
 ल हे न वा प्र ण हे न व उ वा च ॥ अथ त्वे मा न नि द वि नि म्म त्त म स न
 सि नि क्क न ग कि प्र ह र वि वृ धि त्वं त ज मा ति नि क्त न नि स र्व ह न न
 सं सां व सिं अ व सि ता ॥ मा तो वि ज वा नि द वि का न र्धं क स व त्स ल
 अथ ति य न मं न त्वे नि ब्रानं स ह ति त ज्ञा मा पि नृ सृ ग व क र्पा प ना
 क्त न ग कि त्व मि क्क कि मा मं ग ता म र ध र णा त्त न वा य स हा सु ना यो
 ति र्पा स्व र्पा मि वा ऊ ष्ठा ना मा दे वा मा व ना दि म ना यो मि को

विहृर्याव धृता धृ वद्वा कृ गित्वं णि का ह्य न उ म वा न डी का न ने
का न सं पा श्रु न त्व मा य ध न त्व र्या स्व र्या ह म का ल व स्त
मिति, विहृरु ता द विगृ हः आदि न का न त्वा ह वा या नि र्या स्व र
या व शी के लु स मा ह नि र्द मा ना न था न न श कि स स धा णि म्
म नी सा र्था नि हा न ह नि नि थि म मि का ला न ह ना ह ना का व मे ध
म हो कि स स धा सि का नृ ग हि स कृ ना वि ना र्वे म हा स न स हा नि
ना का ह म का मृ ता वि नृ स न्दा ह नि स न द ह पू ना श व स म क य
ना न द नि र्वा न सा र्वा प्र द हे न वि हे न व द्या न कि ज न श क य ना मा

सी ती र्द मा ना वि न र्द श कि ॥ ख गी सि धि वा रा श्व नी सि धि मा ना
वि ह १ म र्द मा ना वि न र्द श कि ख गी सि धि वा रा श्व नि सि धि मा ना
वि ह १ म द ना शानि प्रा म्भ लु वे वा नि १३ धा नि वा सि धि मा रा श्व नी
सा ह का सि ध मि का दि या म र्द ता सि धि ल वि वि ह नि सं ह नि स ह नि र्म
नि श्व नि वा नी ना ना य नि न क व श क ता ल ख ना हि म न्या म हा
कृ ष्ण षा ग वि माः खं ज म म्भ र्ति ना र्द सं ह नि र्वे न वा मा न द द व स्य
वा स र्ज या ना मृ ता म नु मा र्ज नृ जे म्भो ति हि म्भो ह हि वी न ण ना न न के स
ह के १ ध स प य म र्द वि यं ५ म मृ ने दि व या ना स वे मृ १३ की की ल का
या सि नि न क ज म वि ज म नि ज म व नु प य व य म क र्मा ह वे १ म म

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ हे हरे हरिः स्वयं समग्रमां सप्रिप्रमनु विद्यावता हा सि
हि ॥ म० ३ कं का तका पात्रिक दिव्य वप्री न रक्षे सहे ॥ १३ सर्व स्रसद विनम
स्मा नउं का तस्वा हास्य धा का नवो वव वषका नहं का नरु ग का नडा गिहि नम
वममा को ना बा हि धीम हस सास्ति ते नृक स गवाने वापि हि ॥ सा ध के पुत्र वे स
ए हि म ॥ ३३ ते दि कि ने मा गि हि मा गि नि वृ न्द म ना प के रू ड कि ज न स र्व स्र स
मा गि ना मा ग सि वि पु द द वि र्व प प्र प ग य म ना व न स्त्र ह पु ल्ले सु स प म्भ स न
म र द्या न नि के स्ति ग स फ या ना त स व वा नि ति थि न श्रा ह ना व ल न ह कि ना म व ॥
॥ ३३ कं क का त दि का त गि का त व ॥ ३४ व क्श व प्र क वा षो ॥ ३५ वि स स्म न ध ॥ ३६ स दा मा
न र सा वि बो ना गि स म्मा लु र्व व र्व ता ग वि स न क स र्व वी पु त्र न ना म म हा ता कि प्र द ह
म को ना न्न दा ना न श का ॥ ३७ वृ क्श ध ग म धु म हा दा व इ षा वि म्भ अ कि र्म स्म ल दा व र्व
ध टि र्व न्द ने ना गि पा ह ॥ ३८ श्रा व र्व या दा र्म त स म पि ल ना म स कि ल त र्द वि म्भ अ कि
॥ ३९ म हा वा धि हि सं स्म न पा दा न वि न्द व पु नः स की नी का ता नि न र पु हा स्ति र्द
वि न्द वृ क्श न व डा के पु ष्पा य धे मा ति मा ता ति स ल प म्भ कि ल स पि द र्म श दा ल स र्व
वि ला म्भि क र्हे न वि हे न व र्म श न ना ग नो ह के म स्ता य ना ध द म म्भि य ना ध